B.A. III Yr + Ist Yr.

कुछ महत्त्वपूर्ण काव्यों पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ –

राजतरंगिणी – कल्हण रचित राजतरंगिणी सर्वाधिक दीर्घकाल के इतिहास पर प्रामाणिक सूचना देनेवाले काव्यों में अग्रणी है। इसमें प्राचीनकाल से लेकर कल्हण के काल (1150 ई०) तक का इतिहास प्राप्त है। इनका जन्म 1100 ई० के आसपास माना जाता है। राजतरंगिणी की रचना कवि ने 1148 ई० से प्रारंभ कर तीन वर्षों में पूरा किया था। उन्होंने कश्मीर की राजनीति से अलग रहकर 'अलकदत्त' नामक विशेष पुरुष के आग्रह पर कश्मीर के विकीर्ण ऐतिहासिक अभिलेखों को संकलित कर 'राजतरंगिणी' की रचना का उपक्रम किया। उन का युग कश्मीर के इतिहास में राजनीतिक संघर्षों से भरा हुआ था।

कल्हण की एकमात्र रचना 'राजतरंगिणी' आठ तरंगों में विभक्त है। इसमें 7826 श्लोक हैं जो मुख्य रूप से अनुष्टुप छन्द में है। काव्य का उत्कर्ष ऐतिहासिक काव्यों की तरह न होकर गीतिमय छन्दों में वर्णित है। सबसे बड़ा है आठवाँ तरंग जिसमें 3449 श्लोक हैं, दूसरे क्रम में सातवाँ तरंग है जिसमें 1732 श्लोक हैं। आरंभ के छः तरंग लघुकाय हैं। ग्रंथ के आरंभिक चार तरंगों में राजाओं का वर्णन पौरा-णिक जैसे हैं जबकि पंचम तरंग से - अवन्तिवर्मा के शासनकाल (855 ई० – 883 ई०) से वास्तविक इतिहास शुरु होता है। एवं आठवें तरंग में कवि ने अपने युग के (1101 ई० 1150 ई०) विस्तृत - वर्णन से समाप्त किया है। 'राजतरंगिणी' में कलियुग के आरंभ से 1150 ई० तक के कश्मीर के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास काव्य के रूप में वर्णित है। 2500 वर्षों (2500 वर्षों) के वर्णित इतिहास में अन्तिम 400 वर्षों की घटनाएँ तिथिक्रम से बतायी गयी हैं।

कल्हण ने इस ग्रंथ की रचना में प्राचीन ग्यारह ऐतिहासिक ग्रंथों तथा 'नीलमतपुराण' की सहायता ली है –

'दृग्गोचरं पूर्वसूरि-ग्रन्था राजकथाश्रयाः।
मम त्वेकादश गता मतं नीलमुनेरपि॥

इन ग्रंथों में 'नीलमतपुराण' ही इस समय उपलब्ध है। इतिहासकार की निष्पक्ष दृष्टि की कल्हण ने प्रशंसा की है –

Scanned with CamScanner

श्लाघ्यः स एव गुणवान् रागद्वेष - बहिष्कृता।
भूतार्थ कथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती ॥ (1/7)

वही गुणी इतिहासकार श्लाघ्य है, जिसकी वाणी
न्यायाधीश के समान अतीत की घटनाओं के निरूपण में
राग-द्वेष मुक्त है। इसलिए कल्हण में संकीर्णता तथा
एकपक्षता नहीं है। वह स्वयं तंत्र तथा शैव समर्थक थे किंतु
बौद्ध धर्म के भी मुखर प्रशंसक रहे। वे अपनी जन्मभूमि
के निवासियों की भीरुता, मिथ्या-भाषण, संग्राम से पलायन,
परस्पर कलह, विद्रोह, पक्षपात, दुराग्रह आदि दुर्गुणों की
भी चर्चा करते हैं।

कल्हण ने इतिहास के वर्णन में कल्पना का
लेकर ठोस यथार्थ का पालन किया। प्रथम
आश्रय न ~~लोक~~ राजवंशों का वर्णन है जिसमें प्रथम तरंग ५२
चार तरंगों में कश्मीर के बाहर की
(५२) शासकों का उल्लेख है। द्वितीय तरंग में आनेवाले छह राजा आदिक
राजा प्रतापादित्य बनता है और इसमें गोनन्दीय वंश का
कलह से घिरे होते हैं। तृतीय तरंग में कर्कोट - राजवंश का शासन
उद्धार होता है। 'चतुर्थ तरंग' में राजाओं का ऐतिहासिक
वर्णित है।' 'पंचम तरंग' में उत्पलवंशीय गया है। 'षष्ठ तरंग' में
कालक्रम तिथि सहित दिया से लेकर रानी दिद्दा (980-1003
यशस्कर (939-948 ई०) में 'लोहरवंश' के प्रायः
ई०) तक का वर्णन है। 'सप्तम तरंग' का वर्णन है।
एक सौ वर्षों के शासनकाल में कल्हण के अपने युग की घटनाएँ
'अष्टम तरंग' (1101-11 ई०) से लेकर
वर्णित हैं (1101-1128 ई०), उच्चल का वर्णन मिलता
जयसिंह (1128-59) तक के शासन
है।

कल्हण ने अनेक प्रासंगिक घटनाओं का वर्णन तन्मयता
से किया है, जिससे उनके वर्णन-क्षमता की विशिष्टता झलकती
है। इसके साथ ही उनकी नीति शास्त्रीरूप भी प्रकट होता है।
शान्ति और सम्पत्ति की अस्थिरता, कीर्तियों की क्षणिकता,
पापियों को लोक-परलोक में मिलनेवाला दण्ड आदि
नैतिक विषयों को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने में कवि की
दृढ़ आस्था है - योऽयं परापकरणाय सृजत्युपायं तेनैव तस्य
नियमेन भवेद् विनाशः। धूमं प्रसौति नयनान्धकारं यमग्नि-
-भूत्वाम्बुदः स शमयेत् सलिलैः स्तमेव॥ (4/125)